View metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Repository



12

*(प्लेटिनम जयन्ती समारोह के दौरान दिनांक 28.09.2017 को आयोजित हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त लेख)*

# समुद्री जैवविविधता - चुनौतियाँ एवं समाधान

**उमा पी. टी. एस.**
भवंस विद्या मंदिर, एलमक्करा

जैव विविधता जीव जंतुओं की परिवर्तनशीलता है, जिससे लौकिक, समुद्र के पारिस्थितिक तंत्र, निवास, आदि शामिल हैं. समुद्री जैव विविधता में, समुद्र की विभिन्न प्रजातियाँ एक स्थान पर मिल-जुलकर रहते हैं. जैव विविधता का मतलब जीवन की विविधता है जिसमें तालाब, शुद्ध पानी, नदी, झील, भूजल, धारा, सागर, समुद्र आदि शामिल हैं जहां अनोखी प्रजातियाँ एक दूसरे का सहारा बनकर रहती हैं. सालों से ही मनुष्य समुद्री संसाधन जैसे खाना, दवाई, अन्य सामग्री, व्यावसायिक प्रयोजन जैसे मछली पकड़, पर्यटन आदि पर निर्भर रहता है.

समुद्री जीव जंतुओं को मनुष्य के हीन कार्यो की वजह से बहुत कुछ सहन करना पड़ रहा है. मनुष्य की प्रवृत्तियों और हस्तक्षेपों से जैवविविधता लुप्त हो रही है. शुद्ध जलाशय और समुद्री पर्यावरण में समुद्री जैवविविधता को क्षति हो रही है. आज समुद्री जैवविविधता की चुनौतियों में से कुछ हैं - प्रजातियों का अधिक दोहन, प्रदूषण आदि. पर्यावरण में आए भारी परिवर्तन समुद्री जैवविविधता पर प्रभाव डाल सकते हैं.

समुद्री प्रजातियों का शोषण हो रहा है. अनेक मछलियों को निरंतर पकड़ा जा रहा है. अमेरिका के महासागर में बहुत सारे शार्क को पकड़ा है न केवल उसके मांस के लिए बल्कि कई अधिक कार्यों के लिए. प्रजातियों की आनुवंशिक विविधता खत्म होने पर जीवसंख्या में कमी आ रही है जो समुद्री पर्यावरण के लिए खतरा बन सकता है.

आवास में आया परिवर्तन प्रजातियों के विनाश का कारण बन रहा है. विषैली वस्तुएं, निलंबित ठोस वस्तुएं, मल और कार्बनिक वस्तुओं से होने वाले प्रदूषण जैवविविधता के लिए चुनौती हैं. कारखानों से निकलने वाले रसायन भारी मात्रा में पानी में विद्यमान होने पर जीव जंतुओं के लिए हानिकारक हो सकते हैं. बढ़ते तापमान से आक्सिजन की कमी जीव जालों की मृत्यु दर बढ़ जाती है. वर्ष 2010 जैवविविधता का वर्ष मनाया गया और अनेक जगहों को सुरक्षित घोषित किया गया जैसे ओस्ट्रेलिया के पूर्वोत्तर तट पर स्थित ग्रेट बारियर रीफ इतना विशाल है कि आकाश से भी दिखता है. यहाँ सारे पारिस्थितिक तंत्र को संभालकर रख दिया गया है. यहाँ मछली पाकड़ के लिए भी प्रतिबंध लगाया गया है और नाव भी निश्चित दूर तक जा सकती हैं. दुनिया की सबसे बड़ा संरक्षित जगह प्रशांत महासागर में समुद्री जीव जैसे कच्छ्प (ग्रीन टर्टिल), डॉलफिन, मुक्ता शुक्ति (पर्ल ऑयस्टर) को संरक्षित किया गया है.

जैवविविधता के संरक्षण के लिए सत्ता का दायित्व भूलना नहीं चाहिए. वृक्षों की कटाई एवं पानी प्रदूषण को रोकने के लिए कदम उठाना चाहिए. अनेक जगहों को समुद्री बायो-रिसर्व के रूप में बदलना होगा. आज की युवा पीढ़ी समझदार है और जीव जन्तुओं

के संरक्षण के लिए सक्षम है. समाज में जागृति अभियानों का संचालन करके जैवविविधता का सन्देश जनसाधारण तक पहुंचाना है. वर्षो पहले यु एस डी ए ने ऐसी ही कक्षाओं का संचालन किया था.

जलाशयों के पास के वृक्षों की कटाई से और मिट्टी की खुदाई से पर्यावरण में परिवर्तन आता है. इसी प्रकार नदी तट और जलाशयों के पास कारखानों का निर्माण करने से वहाँ से छोड़े जाने वाले अपशिष्टों का बुरा प्रभाव नदी या जलाशय की जैवविविधता पर पड़ता है और इन जीवों का जीवन खतरनाक होता है.

कुछ लोगों की आदत है समुद्र या नदी के पानी में कूड़-कचरा फेंकना. इससे पर्यावरण के लिए बहुत खतरनाक हो सकता है. कूड़े-कचरे में होने वाले रासायनिक पदार्थों, प्लास्टिक और अन्य वस्तुओं से पानी में रहने वाले जीवों को साँस लेना मुश्किल होता है और जीवन के लिए भीषण हो सकता है.

इस दुनिया में जीने का हक़ जितना हमारा है उतना ही अन्य जीव जंतुओं का भी है. आओ हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि जीवजंतुओं का संरक्षण करके जैवविविधता को बचायेंगे.

**"समुद्री जैवविविधता की रक्षा कीजिए,**

**जीवन का मूल्य बचाइए"**

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी ।।

**- *मैथिलीशरण गुप्त***